Indian J. Soc. & Pol. 05(I):2018:83-84 Special Issue **ISSN : 2348-0084(PRINT)**
UGC List No. 47956 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

सोलहवीं लोकसभा के निर्वाचन में युवाओं की भूमिकाः एक अध्ययन

अनुपम चतुर्वेदी[1a]
[a]व्याख्याता, राजनीति शास्त्र, राजकीय बांगड़ महाविद्यालय, पाली राजस्थान, भारत

ABSTRACT

नियमित निर्वाचन लोकतंत्र की जीवन रेखा होते है। ये बात न केवल भारत के लिए सत्य है बल्कि उन सभी देशों के लिए भी सत्य है जहॉ निर्वाचन नियमित रूप से होते रहते है। भारत में संघीय शासन प्रणाली है जहॉ राष्ट्रीय संसद के साथ राज्यों की विधानसभा के निर्वाचन भी होते है। इन निर्वाचनों से जनता की निर्वाचन प्रक्रिया में सहभागिता का पता चलता है। निर्वाचन में विजयी होने के लिए राजनीतिक दलों द्वारा उन सभी मुद्दों को भुनाया जाता है जो उन्हें विजय दिला सके। 16वीं लोकसभा के निर्वाचन में निर्वाचन के परम्परागत मुद्दों के साथ युवा वर्ग की ओर भी राजनीतिक दलों द्वारा (वोट बैंक के रूप में) ध्यान आकर्षित किया गया। इस शोध पत्र में 16वीं लोकसभा के निर्वाचन में युवाओं की भूमिका का अध्ययन कर इस बात को समझने का प्रयास किया गया है कि निर्वाचन प्रक्रिया को युवा किस तरह प्रभावित कर सकते है।

KEYWORDS: *निर्वाचन, लोकतंत्र, संसद, युवा, संघीय शासन*

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। आज भारत में सबसे ज्यादा युवा बसते है। भारतीय निर्वाचन आयोग के मतदाता जागरूकता अभियान से लेकर भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना हजारे के आन्दोलन तक, पर्यावरण संरक्षण से लेकर कन्या भ्रूण हत्या हो या महिला हिंसा के विरूद्ध आवाज उठाने तक आज इन सभी मुद्दों पर युवा अपनी सहभागिता निभा रहे है। भारत की निर्वाचकीय राजनीति की जब भी चर्चा होती है तो यह चर्चा जातिगत रूझानों के सिलसिले में होती है। प्रायः यह माना जाता है कि राजनीतिक दल जातियों की गोलबंदी कर चुनाव जीतने का प्रयास करते है। मण्डल के दौर में यह अन्य पिछड़ी जातियों के मतदाताओं की गोलबंदी कर केन्द्रित रहता था तो कुछ वर्षो तक दलितों को भी वोट बैंक के रूप में देखा जाने लगा। कुछ विद्वानों द्वारा स्त्रियों के मतदान सम्बन्धी रूझानों और उनकी भारतीय राजनीति में भूमिका पर प्रकाश डाला गया। लेकिन एक मतदाता श्रेणी की तरह युवा मतदाताओं पर विशेषज्ञों का ध्यान नहीं गया।

पंद्रहवी लोकसभा के चुनावों के बाद युवाओं की ओर ध्यान आकर्षित होने लगा और यह चर्चा प्रारम्भ हुई कि युवा भी मतदाता की अलग श्रेणी हो सकते है। पंद्रहवी लोकसभा में चालीस साल से कम उम्र के 79 युवा सदस्य थे। सोलहवीं लोकसभा के निर्वाचन में राजनीतिक दलों द्वारा युवा शक्ति के महत्त्व को प्रारम्भ से ही समझ लिया गया और निर्वाचन में युवाओं के वोट प्राप्त करने के लिए हरसंभव प्रयास किये गये।

युवा की परिभाषा

राजनीति में किसे युवा माना जाय इसको लेकर आम राय नहीं है। भारत सरकार के युवा और खेल मंत्रालय के अनुसार 13 से 35 वर्ष की उम्र के लोगों को युवा कहा जाता है। 2011 में इसी विभाग की एक समिति ने सुझाव दिया कि 13 से 18 साल के बीच के लोगों को युवा कहा जाय। भारत में 18 से 25 वर्ष के बीच युवा मतदाताओं की भारी संख्या है। राष्ट्रीय स्तर पर युवाओं की आबादी के बारे में कोई सरकारी अनुमान उपलब्ध नहीं है। लेकिन हर चुनाव से पहले भारत का चुनाव आयोग आँकड़े जारी करता है कि भारत के किस राज्य में कितने नए मतदाता जुड़े। निर्वाचन में युवाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए भारत सरकार ने भी 25 जनवरी की तारीख राष्ट्रीय मतदाता दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य उन मतदाताओं का नाम मतदाता सूची में दर्ज करना है जिन्होंने 1 जनवरी को 18 साल पूरे किये हो।

कुल मिलाकर एक श्रेणी के रूप में युवा होने की न्यूनतम परिभाषा के रूप में विद्वानों के बीच आम राय नहीं है। इसलिए अभी तक भारतीय युवा जैसी किसी श्रेणी का निर्धारण आसान नहीं है।

सोलहवीं लोकसभा में युवा मतदाताओं की संख्याः– 16वीं लोकसभा के निर्वाचन में लगभग 81 करोड़ मतदाता मतदान के लिए तैयार थे। चुनाव आयोग के आँकड़ो के अनुसार पहली बार मतदान कर रहे युवाओं की संख्या लगभग 12 करोड़ थी। प्रत्येक लोकसभा क्षैत्र में औसतन 90,000 वोटर ऐसे थे जिनकी आयु 18 से 22 वर्ष थी।

युवाओं का मतदान लोकसभा चुनाव 1999–2014 (आँकड़े प्रतिशत में)

मतदाता की श्रेणी	1999	2004	2009	2014
युवा मतदाता 18–25	57	52	54	68
राष्ट्रीय मतदान	60	58	58	66

(स्त्रोतः C.S.D.S.)

भारतीय जनता पार्टी की विजय और युवा मतदाताः– सोलहवीं लोकसभा के निर्वाचन के प्रारंभ से ही भाजपा ने युवाओं को अपनी और आकर्षित करना शुरू कर दिया था। भाजपा का मानना था कि किसी भी समाज में युवा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है और आज

1: Corresponding Author

का युवा तो पहले की अपेक्षा कई ज्यादा जागरूक हो चुका है। सोलहवीं लोकसभा के निर्वाचन में बेरोजगारी, गिरती अर्थव्यवस्था, भ्रष्टाचार और अस्थिर विदेश नीति जैसे मुद्दों पर युवाओं ने भाजपा का खुलकर समर्थन किया और भाजपा की ऐतिहासिक विजय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

युवा मतदाताओं में भाजपा का प्रदर्शन (2014)

राज0 दल	2004			2009			2014		
	सभी मत दाता	युवा	अन्य	सभी मत दाता	युवा	अन्य	सभी मत दाता	युवा	अन्य
कांग्रेस	26.5	27	26	28.6	28	29	18.6	19	20
भाजपा	22.2	23	22	18.8	20	18	31.1	34	30
वाम दल	7.9	8	8	7.5	7	8	4.8	4	5

(स्त्रोतः C.S.D.S.) सभी आँकड़े प्रतिशत में

नरेन्द्र मोदी ने अपने भाषणों के दौरान युवाओं की ताकत के बारे में कहा तथा विकास का वादा किया और युवाओं को आगे आकर परिवर्तन के लिए वोट देने की अपील की। कई युवा मतदाता जो पहली बार मतदान का उपयोग कर रहे थे और जिन्होंने गैर कांग्रेसी सरकार कभी नहीं देखी थी उनके लिए मोदी की जयकार एक फैशन बनी गई। युवाओं को लगा कि मोदी एक बेहत्तर इंडिया दे सकते है। किसी कॉरपोरेट के सीईओ की तरह उन्हें पेश किया गया जो अपी कंपनी का नई ऊंचाईयों पर पहूंचा सकता हैं कॉरपोरेट वर्ग से आने वाले युवाओं के लिए यही एक छवि उन्हें मोदी की ओर मोड़ने के लिए काफी थी। कुल मिलाकर सोलहवीं लोकसभा में युवाओं ने भाजपा की विजय में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

कांग्रेस और युवा मतदाताः– पंद्रहवी लोकसभा के निर्वाचन में कांग्रेस काफी हद तक युवा मतदाता को आकर्षित करने में सफल रही थी। सोलहवीं लोकसभा में कांग्रेस ने इस करिशमें को दोहराने का प्रयास किया और उसके नेता राहुल गांधी ने कहा कि ''2014 में युवाओं की सरकार आएगी। कांग्रेस पार्टी चुनाव में नए ताजा युवा चेहरों को खड़ा करेगी।'' लेकिन सोलहवीं लोकसभा के निर्वाचन में कांग्रेस भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, महंगाई जैसे मुद्दों पर युवाओं को सन्तोषजनक जवाब नहीं दे पाई और 44 सीटों पर सिमटकर रह गई।

युवाओं की बढ़ती सहभागिताः– पिछले कुछ दशकों में यह देखा गया था कि आम जनता विशेषकर युवा वर्ग की राजनीति में भागीदारी कम हुई थी। राजनीतिक विमर्श में युवा वर्ग अपने विचार बहुत कम रखते थे। लेकिन सोलहवीं लोकसभा के निर्वाचन में सूचना क्रांति ने इस तस्वीर को पूरी तरह बदल दिया। 16वीं लोकसभा के निर्वाचन के पूर्व अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन हो या महिलाओं के प्रति अपराधों का विरोध करना हो युवाओं ने सड़क पर आकर अपनी सक्रियता दिखाई। युवा राजनीतिक परिचर्चा की मुख्यधारा में आ गया। इन सभी घटनाओं ने राजनीतिक दलों को अपनी रणनीति बदलने के लिए मजबूर किया। युवाओं को आकर्षित करने के लिए युवाओं को निर्वाचन में अधिक से अधिक उम्मीदवार बनाने की घोषणाएँ दल करने लगे।

सोलहवीं लोकसभा में युवाओं का प्रतिनिधित्वः– 16वीं लोकसभा के निर्वाचन में 69 सांसद ऐसे थे। जिनकी आयु 40 वर्ष से कम थी। 216 ऐसे सांसद हो जिनकी आयु 55 वर्ष से कम है। सोलहवीं लोकसभा में 12 सांसद ऐसे है जिनकी आयु 30 वर्ष से कम है उनमें से 4 महिलाएँ है।

निष्कर्ष

निर्वाचन प्रक्रिया में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए इसमें कोई सन्देह नहीं है। यदि किसी देश को सभी क्षैत्रों में विकास करना है तो यह आवश्यक है कि युवा सरकारी मशीनरी में भाग ले। युवा अपने साथ नए विचार, नई ऊर्जा लाते है जो आने वाले भविष्य को सुनहरा बनाते है। युवाओं की निर्वाचन प्रक्रिया में भागीदारी का सबसे बड़ा फायदा यह है कि युवा तकनीक के जानकार होते है जो निर्वाचन प्रक्रिया को तेज, सरल एवं आम आदमी की पहुँच तक आसान बनाते है। सोलहवीं लोकसभा के निर्वाचन में युवाओं ने उत्साह के साथ भाग लिया और देश के सामने ऐतिहासिक परिणाम सामने आए। भारतीय जनता पार्टी की स्पष्ट विजय ने यह संकेत दे दिया कि युवा भी अलग राजनीतिक श्रेणी है। क्योंकि इससे पहले किसी चुनाव में युवा ऐसा गोलबंद नहीं हुआ था। सोलहवीं लोकसभा के निर्वाचन ने राजनीतिक दलों को यह अनुभव करा दिया कि युवा मतदाता विशाल संख्या में है और उन्हें अपने दल की और आकर्षित करने के लिए असाधारण प्रयास करने होंगे। ये निर्वाचन तो एक शुरूआत थी आने वाले निर्वाचन में युवा और अधिक सक्रिय सहभागिता निभाएंगे ऐसी आशा की जा सकती है।

सन्दर्भ

रूकमणि एस, इंडिया इलेक्ट्स इट्स ओल्डेस्ट एवर पॉर्लियामेन्ट, द हिन्दू, 17 मई 2014

बनर्जी मैयतबी, इर्म्पोटेंस ऑफ यूथ पॉटिशिपेशन इन इलेक्टोरल पॉलिटिक्स, www.Indiayouth.Net

कुमार संजय, युवा मतदाता बँटी हुई प्राथमिकता, प्रतिमान जनवरी जून 2014

कुमार संजय, (2014) इंडियन यूथ एण्ड इलेक्टोरल पॉलिटिक्स सेज, नई दिल्ली

कुमार संजय, राय प्रवीण (2013) मेजरिंग वोटिंग विहेवियर, सेज नई दिल्ली

कुशवाहा अजित, युवाओं की दुनिया, भारत में युवा शक्ति एक वरदान, रविवार 9 नवम्बर 2014

जिन्दल प्रिंसी, पॉवर ऑफ यूथ इन जनरल इलेक्शन 2014, www.election.in.org

जोशी शालिनी, सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव और चुनावी राजनीति, न्यूज राइट्र्स.इन